पंचवर्षीय योजनाकी आलोचना

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ३३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १३ अक्तूबर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

भ्रष्टाचार पर रोक

भ्रष्टाचार बहुत बड़े पैमाने पर देशमें फैला हुआ है, अिसके बारेमें शंकाके लिअे स्थान नहीं है और शुद्ध व्यवहार आंदोलनके सिलसिलेमें जो समाचार मेरे पास आये हैं, अुनसे यह भी साबित होता है कि कुछ व्यक्ति अुसे हटानेके लिअे व्याकुल हो रहे हैं। तथापि कोओी अैसा कारगर अुपाय नहीं सुझाया गया है या सूझ रहा है, जो अिस दुराचारको पहुंच सके। प्रयत्न तो करते ही रहना है। आखिर लोकमत जाग्रत होनेसे ही कुछ हल निकल सकेगा। अिस हेतुसे यह सुझाया गया था कि भ्रष्टाचारके मसले नाम, गांव, ठांव-ठिकाने सहित अखबारोंमें प्रकाशित किये जायं। कुछ अखबार अब भी अैसा कर रहे हैं। जरूरत हो तो अिसी कामके लिअे अेक अलग अखबार चलाया जाय। कुछ भाअियोंने अिस सूचनाका स्वागत किया है।

वास्तवमें भ्रष्टाचारकी शिकायतें अुन सरकारी अधिकारियोंके पास पहुंचनी चाहिये, जो अुस विषयमें निश्चित रूपसे कुछ कर सकते हैं। पर कभी दफा यह अनुभव आता है कि शिकायत अधिकारियोंके पास पहुंचने पर भी विशेष कुछ होता नहीं; वे लापरवाह रहते हैं। हम अिसमें सारा दोष अधिकारियोंका ही न मानें; क्योंकि अुनके पास राग-द्वेषसे प्रेरित अनेक गलत शिकायतें पहुंचती होंगी। अिसलिअे हमें अेक अैसा जरिया खड़ा करना चाहिये, जिसमें शिकायत करनेवालेकी बात सही माननेमें शंका न रहे। अपने-अपने स्थानोंमें शुद्ध व्यवहार मंडल जैसी संस्थाअें स्थापित करके अगर शिकायत अुनके द्वारा जांच होकर अधिकारी तक पहुंचे तो अच्छा होगा। अैसा मंडल कुछ मामले खुद भी अदालतमें ले जाय। अिसके अलावा, जो व्यक्ति अपने सिर पर खतरा अुठा कर शिकायत करनेकी आगे बढ़ता है, अुस पर भरोसा किया जाना संभव है। जब शिकायत नाम, गांव, ठांव-ठिकाने सहित अखबारमें छप जायगी, तो अुसकी जिम्मदारी अुस अखबार पर तथा व्यक्ति पर आ ही जाती है। अुससे जन-जागृतिमें मदद मिलेगी और अधिकारी लोग अपनी जिम्मेदारी अधिक महसूस करेंगे।

अैसा लगता है कि अिस योजनाका श्रीगणेश होना चाहिये। पर अिसमें बहुत जोखिम है। धूर्त लोग तो अिसमें काम आयेंगे नहीं। भावुक लोग साहस करेंगे। अुनको दूसरोंसे सहारा और बल मिलना जरूरी होगा। यह काम शुद्ध व्यवहार मंडल जैसी संस्था कर सकेगी। अिसके अलावा, अखबारोंमें अैसी शिकायतें प्रकाशित होनेके लिअे कुछ कड़ी शर्तें होनी चाहियें, ताकि अिस जरियेका राग-द्वेषसे दुरुपयोग न हो।

अक्सर भ्रष्टाचार दो प्रकारका होता है। अेक व्यक्तिगत और दूसरा खुले आम। व्यक्तिगतमें भी अेक प्रकार यह है कि बेजा फायदा अुठानेके लिअे अर्थात् अपना स्वार्थ साधनेके लिअे रिश्वत देना। अैसे व्यक्तियों द्वारा कोओी अुपाय होनेकी आशा नहीं है। दूसरा प्रकार यह है कि विषम परिस्थितिमें अपना काम निकालनेके लिअे कुछ दिये बिना चारा नहीं रहता। अगर अुस व्यक्तिमें शुद्धताकी अुत्कट अिच्छा हो, तो वह अुसे प्रकाशित करके अुजालेमें लावे। शायद प्रारंभमें रिश्वत लेनेवालेका नाम प्रगट न करना पड़े, अधिकारियों द्वारा जांच होने पर बतलाना पड़े। खुदका नाम प्रकाशित करके वह जोखिम अुठानेको तैयार हो। शायद जिसने रिश्वत ली हो अुस पर आरोप साबित न हो सके, खुदको ही भुगतना पड़े; तो अुतनी तैयारी चाहिये।

खुले आम भ्रष्टाचार रिवाजका रूप धारण कर लेता है। रेलवे, कचहरी, आदि स्थानोंमें कओी बातें अैसी हैं कि जहां मान लिया जाता है कि कुछ दिये बिना काम चलेगा ही नहीं। यह भ्रष्टाचार खुद रिश्वत देनेवाले प्रकाशित नहीं करेंगे। अिसमें दूसरोंको आगे बढ़ना होगा। देनेवाले भी अितना तो कर सकते हैं कि जो अपने यहां बहीखाते रखते हैं, वे अैसा बेजा खर्च ठीक अुसी रूपमें बहीखातोंमें लिखें। अिन्कम-टैक्स अधिकारी आदिके सामने वह अुसी रूपमें जावे। और अुसमें वह खर्च मुजरा न मिले, तो अुस पर आखिर तक लड़ें। पर अैसा अधिकतर काम दूसरोंको ही करना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग, शांति-सेना, सेवादल आदि संस्थाअें कभी-कभी चुपचाप चौकी करें और अैसे स्थानों पर निरीक्षण कर, तो बहुतसे दोष अुजालेमें आयेंगे और दोष करनेवालों पर भी धाक रहेगा। अैसे संगठित प्रयत्नसे ढूंढ निकाले गये दोष अधिकारियोंके सामने पेश किये जा सकेंगे और अखबारोंमें भी छपाये जा सकेंगे। साथ ही आरोप साबित करनेके लिअे कुछ गवाह भी मिल सकेंगे।

यह तो मानना ही होगा कि अैसा काम अपने सिर पर अुठानेवाले व्यक्ति बहुत थोड़े मिलेंगे। पर अिस दिशामें जो कुछ काम होगा, अुसका असर गहरा होगा; क्योंकि अिसमें त्यागकी बात है। जैसा कि अूपर कहा गया है, जिसमें साहस हो और जो कष्ट सहनेको तैयार हो, वही यह कदम अुठावे।

अिस सिलसिलेमें अेक और बातका विचार कर लेना चाहिये। शिकायत करनेवाले व्यक्ति पर और अखबार पर मानहानि आदिके मुकदमे होना संभव है। अुस दशामें क्या हम अपने बचावके लिअे अदालतोंमें लड़ते रहेंगे? कभी लड़ना भी पड़े। बेहतर तो यही होगा कि अपनी सफाओीका बयान देकर मुकदमा लड़नेकी झंझटमें न पड़ा जाय और जो कुछ सजा हो अुसे भुगतनेकी हमारी तैयारी रहे। हरअेक मामलेका स्वतंत्र रीतिसे विचार करना होगा। अिस तपश्चर्याका परिणाम भी व्यवहार शुद्धि होगा।

मैं जानता हूं कि अिस लेखमें जो योजना लिखी है, वह बहुत कठिन है। अिसलिअे जिस किसीको अिसमें पड़ना हो, वह सोच-विचार कर पड़े। दूसरोंको भी अुसे मदद देनेको तैयार रहना चाहिये। यह कदम खतरेका होते हुअे भी भ्रष्टाचार रोकनेके लिअे जो अनेक अुपाय सुझाये जा रहे हैं, अुनमें यह भी अपना खास महत्त्व रखता है।

सेवाग्राम, १८-९-'५१

श्रीकृष्णदास जाजू

www.vinoba.in

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

४

दूसरा मुकाम

[ता० १६-४-'५१ : हयातनगर : १० मील]

दंडकारण्य-प्रवेश

रामनवमीके निमित्त भगवान् रामचन्द्रके जन्मका अर्थात् आत्म-ज्ञानके अुदयका अपने-अपने हृदयमें अनुभव करनेकी प्रेरणा देकर तथा अंतरको केवल राममय रखनेका सन्देश सुनाकर विनोबाजीने तेलंगानाकी यात्रा प्रारंभ की। अिस तेलंगानाको दंडकारण्य भी कहते हैं। हजारों बरस पहले अिसी भूमिने भगवान् रामचन्द्रके चरणोंका परस पाया था, जिसके कारण वह असुरोंकी पीड़ासे मुक्त हो सकी थी। अनेक संतोंने भी यहांकी भूमिको हरीभरी करनेवाली गोदा और कृष्णाके किनारों पर तपस्या करके अिस भूमिको पावन किया था तथा अेकाग्र साधन, अुत्कट चिन्तन और अखंड मनन द्वारा लोक-जीवनको आत्मनिष्ठ और श्रेयार्थी बननेकी प्रेरणा दी थी। पर आज अुसी भूमि पर दुःख और क्लेश सर्वत्र छाया-सा दिखाअी दे रहा था। अिसलिअे अुस प्रदेशमें, अुन सब संतोंकी विरासत साथ लिये, रामका अेक अत्यन्त प्यारा भक्त पदार्पण कर रहा था। मूसाके किनारे सवेरे अुस ऋषिको सैकड़ों भाअी-बहनोंने आदर और श्रद्धासहित बिदा किया। कितने ही सीमा तक पहुंचाने आये। अिस पर भी जी नहीं माना, तो अगले मुकाम तक साथ हो लिये।

अेक सामाजिक समस्या

रास्तेमें जगह-जगह स्वागत-समारोह हुअे। बीचमें अेक अनाथालय भी पड़ता था, पर वहां विनोबाजी नहीं जा सके। अेक मील तक अपने बैंड और पताकाओं सहित अनाथालयवाले हमारे साथ-साथ चले। अिधर हयातनगरवालोंने अनेक कमानों, तोरणों और पताकाओंसे अपने गांवको सजा रखा था। ग्रामवासियोंने अुत्साहके साथ स्वागत किया। दोपहरको अनाथालयके लोग पुनः आये। लड़कियां, लड़के, संचालक आदि। अनेक बालकोंको छुटपनसे, आंठ-आठ, चार-चार रोजकी अुम्रसे, संचालकोंने पाला-पोसा था। अुन सबके म्लान-पिता होनेका सुख संचालकोंकी मुद्रा पर सहज प्रगट हो रहा था। अभी-अभी अुनके यहां दाखिल किया हुआ अेक सुंदर बालक वे अपने साथ ले आये थे। विनोबाजीकी गोदमें वह चांदका टुकड़ा और भी प्यारा दिखाअी दे रहा था। अिसमें शक नहीं कि संचालक लोग अच्छी सेवा कर रहे थे। पर समाजमें अैसी सेवाओंके क्षेत्र कब तक बने रहेंगे?

दोपहरमें गांवके सम्बन्धमें भी चर्चा हुअी। चार हजारकी बस्ती। पांच हजार अेकड़ जमीन, जिसमें से अेक हजार शिकारके लिअे सुरक्षित। खेतीका ही अेकमात्र धन्धा। करीब दो सौ बंडी जोड़ी हैं, जो हैदराबाद जाने-आनेका किराया करती हैं—पांच रुपया पाती हैं। दस चूनेकी भट्टियां हैं। बंडियां चूना ढोनेका काम करती हैं। चार घर बुनकरोंके हैं। फी घर हर माह आधी पेटी सूतका कोटा मिलता है। दो धोतियां बनती हैं। अेक हफ्तेभरका काम रहता है, तीन हफ्तेकी बेकारी। पर अपना सूत कातेंगे नहीं, हाथ-सूतका कपड़ा बुनेंगे नहीं!

सेंदीकी ज्वालाअें

बढ़अी, लुहार, कुमार, दरजी, चमारके भी दो-दो चार-चार घर हैं, जो गांवके लिअे पर्याप्त समझे जाते हैं। कपड़ा, शक्कर, गुड़, मिट्टीका तेल—सभी चीजें बाहरसे आती हैं। अिनके लिअे जो पैसा बाहर जाता है, वह तो जाता ही है; पर सेंदीके कारण भी अत्यधिक पैसा बरबाद हो रहा है, और वह भी अनेक बरसोंसे।

सेंदी, शराब आदि द्वारा गांवकी हर साल कितनी संपत्ति बाहर चली जाती है, अिसका मोटा हिसाब नीचे देता हूं:

	प्रतिदिन रु०		मासिक रु०		सालाना रु०
सेंदी बिक्री	३५०	× ३०	१०,५००	× १२	१,२६,०००
शराब (१ गैलन रोज)	१६		४८०		५,७६०
टैक्स					३,६००
कुल					१,३५,३६०
बस्ती—४०००		फी आदमी करीब			३४
		कमसे कम			३०
अुपरान्त कपड़ा		"			२०
		कुल			५०

यानी सेंदी, शराब और कपड़ेके रूपमें फी आदमी सालाना कमसे कम ५० रुपये गांवसे बाहर जाते हैं। साल भरका दो लाख रुपया हो जाता है। ९८ फी सदीसे ज्यादा लोग सेंदी-शराब पीते हैं। हरिजनोंके तो बच्चे भी पीते हैं। अनाज पर्याप्त नहीं मिलता, अतः सवेरे खाना और शामको सेंदी चलती है। अिस सेंदीमें कलालको कितना और सरकारको कितना मिलता है, यह जानने लायक है:

सेंदीकी कुल कीमत	रु० १,२६,०००
अिसमें अेक्साअिज	३६,०००
झाड़ों पर टैक्स	४४,०००
सरकारकी आमदनी	८०,०००
कलालके लिअे शेष	४६,०००
अिसमें कलालका खर्च	२३,०००
" मुनाफा	२३,०००

सरकारको जमीनसे जहां सिर्फ पांच हजारका लगान मिलता है, वहां सेंदीसे सोलह गुना ज्यादा मिलता है। अैसी सोनेकी चिड़िया सरकार कैसे छोड़ सकती है? ३० में से तेरह करोड़की अिस आमदनीको क्या बंद किया जा सकेगा? लोगोंमें जो सज्जन हैं, वे अपने-अपने गांवोंमें शराब बंद क्यों नहीं करते? 'सरकार गिरफ्तार कर लेगी, हमें कम्युनिस्ट कह कर पकड़ लेगी', अैसी दलीलू लोग करते हैं।

'रातके राजाओं' ने भी साथ छोड़ा!

लोगोंने बताया कि पहले अेक बार रातके राजाओंने लोगोंको शराब पीनेसे रोका था। यहां हमें मालूम हुआ कि कम्युनिस्टोंको रातके राजा कहते हैं। अुस समय गांववाले सभी बड़े सुखी थे। पर कहते हैं कि यह कार्यक्रम शराबसे मुक्ति दिलानेके अिरादेसे नहीं, बल्कि सरकारके खिलाफ अेक कार्यक्रमके रूपमें स्वीकार किया गया था। जब तक सेंदीसे लोग मुक्त रहे, तब तक वे सुखी रहे। परंतु कांट्रेक्टरके दबावसे अिन रातके राजाओंने भी अपना वह प्रोग्राम छोड़ दिया, अैसा गांववालोंका कहना है।

राक्षस भी तो जीते थे!

विनोबाके मुंहसे सहसा निकला: "यह सब बड़ा भयंकर मालूम होता है। फिर भी ये सब लोग जी तो रहे हैं!" गांववालोंमें से अेक भाअीने कहा—"महाराज! रामके जमानेमें राक्षस भी तो जीते थे! सेंदी बंद नहीं होगी तो खराब हालत होगी।

अुसने यह भी कहा: "सेंदी फौरन बंद होनी चाहिये, टेनन्सी अेक्ट पर अमल होना चाहिये, लेवी-वसूलीके तरीकेमें सुधार होना चाहिये।"

* * *

दंडकारण्यकी यात्राका यह पहला गांव, और अुसकी यह हालत! कम्युनिस्ट भाअियोंके तरीकोंकी कुछ झांकी यहां मिली। यद्यपि अुनके बारेमें बहुत कुछ सुन रखा था, परंतु प्रत्यक्ष ज्ञानके बिना अपने मनको विनोबाने कलुषित नहीं होने दिया था। जाहिर है कि गांवकी दशा दयनीय थी। आमदनी कुछ नहीं। फी आदमी अेक अेकड़ जमीन भी नहीं। अुद्योग-धंधे कुछ नहीं। रोटीके बदले सेंदी काफी मात्रामें पेटमें जाती है। पिछले सौ सालसे अैसा ही चल रहा है, अैसा कहनेवाले लोग गांवमें मौजूद हैं। और फिर भी कांग्रेसवालोंको लगता है कि देशके सामने कोअी प्रोग्राम नहीं!

सेवा या सत्ता?

अिस संबंधमें विनोबाजी अेक कार्यकर्तासे बात कर रहे थे: "समाज-सुधारके काममें कांग्रेसवालोंको रुचि नहीं। अुन्हें राजकारण

www.vinoba.in

चाहिये। अुसके बिना सत्ता नहीं मिल सकती। वे कहते हैं, 'अगर सत्ता हम लोग नहीं लेंगे तो दूसरे जो गुंडे हैं, अुनके हाथमें वह चली जायगी।' परंतु अुन गुंडोंके हाथमें सत्ता न जाय, अिसलिअे अिन भले मानुसोंको अुन्हींके तरीकोंका प्रयोग करना पड़ता है। और अुन तरीकोंका प्रयोग गुंडोंकी अपेक्षा भी अधिक सफलतापूर्वक किये बिना कामयाबी कैसे होगी? अिस तरह जो चीज ये नहीं चाहते, अुसका अमल खुद ही करते हैं। जिन्हें ये नहीं चाहते, वे ये खुद बन जाते हैं!"

अिस सारी निराशामें भी अेक आशाकी किरण यहां दिखायी दे रही थी। यहांके कार्यकर्ता श्री पुल्लारेड्डीके प्रत्नोंसे यहां राष्ट्रभाषाका अच्छा प्रचार हो रहा है। तेलगू और हिन्दीके अेक पंडित यहां हैं, जो सवेरे पुल्लारेड्डीके बालकोंको पढ़ाते हैं और शामको अिर्दगिर्दके पचीस देहातोंसे आनेवाले पचीस कार्यकर्ताओंको हिन्दीका ज्ञान देते हैं, ताकि आगे जाकर अुन-अुन गांवोंमें वे कार्यकर्ता हिंदीका प्रचार कर सकें। अपने बच्चोंकी पढ़ाअीके निमित्त पुल्लारेड्डी अुक्त पंडित महोदयको भोजन और पचास रुपया मासिक देते हैं तथा दोपहरमें राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य निःशुल्क चलता है। पंडितका भोजन तो घरमें सबके साथ हो जाता है। कुल ६०० रु० वार्षिक खर्चसे पचीस गांवोंमें राष्ट्रभाषाका बीज बोया जा रहा है और वह बल अब फैलने लगी है। अगर पुल्लारेड्डी अपने बालकोंको पढ़नेके लिअे पराये गांव रखते, तो अुन्हें अपने तीन बालकोंके लिअे दो हजार रुपये सालानासे कम खर्च नहीं आता। यह सब विस्तार अिसलिअे कि सहज ही से कितना बड़ा काम सध सकता है, अुसकी हमें अेक दृष्टि मिले। अनेक गांवोंमें देखा गया है कि लोगोंने बच्चोंको बड़े शहरोंमें रखा है, जिसके लिअे वे हजारों रुपये खर्च करते हैं। वही शक्ति गांवके लोगोंके लिअे खर्च की जाय, तो स्वार्थ और परमार्थ, दोनों सध सकते हैं और गांववालोंका प्रेम भी संपादन होता है। अैसी छोटी-छोटी बातें भी कम्युनिज्मको रोकनेमें मददगार हो जाती हैं, और अुनका अभाव असंतोषकी ज्वालाओंको भड़काता है।

शामकी प्रार्थनामें हजारों स्त्री-पुरुष अुपस्थित थे। यात्राका पहला मुकाम था। सभा कैसी होगी अिसकी कल्पना नहीं थी, फिर भी दूर-दूरके देहातोंसे लोग आये थे। अेक ओर अुनके दर्शनोंका सुख, दूसरी ओर अुनकी बिगड़ी दशाका दुःख।

हम सब अेक परिवारके हैं

विनोबाने लोगोंको समझाया कि "अुनके गांवका कल्याण दिल्लीमें आये हुअे स्वराज्यसे नहीं हो सकता, अुनके गांवमें लगी आग हैदराबादके लोग आकर नहीं बुझा सकते और यह असंभव ही है कि कोअी अेक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियोंका समूह अेक जगह बैठकर अितने बड़े देशकी व्यवस्था देख सके।" अिसलिअे विनोबाने अुन्हें अपने गांवकी सेवाके लिअे अेक मंडली बनानेकी प्रेरणा दी: "यह मंडली गांवकी जरूरतोंको देखे, वने वहां तक गांवमें ही अुनकी पूर्ति करे। हैदराबादसे बहुत कम चीजें मंगाये। शराब-सेंदीसे लोगोंको बचाये और कोशिश करे कि गांवके बाहरके झगड़े, फिर वह कांग्रेसवालोंके हों या समाजवादियोंके, गांवमें आने ही न दे। जब चुनावका मौका आवे, तब आप अपना मत योग्य आदमीको दे सकते हैं। परंतु झगड़ोंका सवाल आवे तो साफ कह दीजिये कि 'हमें आपके झगड़ोंसे कोअी मतलब नहीं। हम न तो कांग्रेसी हैं, न सोशलिस्ट हैं, और न हिंदू सभावादी। हम तो हयातनगरवासी हैं।' अिस तरह आप सबको हाथ जोड़कर कहिये। कोअी बाहरसे आकर आप लोगोंको अेक-दूसरेके खिलाफ भड़कावे, तो कहिये—'हमारा गांव अेक है। हम अेक परिवारके हैं। देशके लोग जैसे देशके बारेमें सोचते हैं, हम भी हमारे गांवके बारेमें सोचना चाहते हैं।' अिस तरह आप दृढ़तापूर्वक बाहरकी बुराअियोंको रोकेंगे, तो आपके यहांकी बुराअियां भी धीरे-धीरे कम हो जायंगी।"

बा० मूं०

अकालकी छाया

गुजरात, सौराष्ट्र, मध्यभारत वगैरा कअी भागोंमें अकालकी छाया दिखाअी देने लगी है। अिस कारणसे जनतामें चिन्ता और घबराहट फैलना स्वाभाविक है। चिन्ता वही सच्ची है, जो प्रयत्नवान बनावे, अुपायोंकी खोज करनेकी प्रेरणा दे, सार्वजनिक आपत्तिके समय सहयोग और अेक-दूसरेकी संभाल रखनेकी वृत्ति जगावे और आत्म-निरीक्षण भी करावे। जो चिन्ता अुद्वेग और बड़-बड़ाहट पैदा करे, दूसरोंके मत्थे दोष मढ़नेकी वृत्ति पैदा करे या माथे पर हाथ रखकर विचारहीन बना डाले, अुससे कोअी लाभ नहीं हो सकता।

अकाल आयेगा, यह मानकर ही सबको काममें लग जाना चाहिये। जिनके पास सिंचाअीकी सुविधा हो, अुन्हें अपनी जमीनमें कोअी न कोअी पोषक खाद्य पदार्थ पैदा करनेका विचार करना चाहिये। भावोंके चक्करमें नहीं पड़ना चाहिये। धन बोनेसे धन मिलता है और अनाज बोनेसे अनाज मिलता है। धन पर नजर रखकर फसल पैदा करनेवाले धनके ढेर तो जरूर देखेंगे, लेकिन अनाजका अभाव और अुसकी पीड़ा तो बनी ही रहेगी। अिसलिअे किसानका पहला धर्म यही हो सकता है कि वह देशका पोषण करने जितना अनाज पहले पैदा करे। अिसमें पैसेका हिसाब लगाना ठीक नहीं है।

फिर भी जब पिछले बरसोंमें किसानों तथा व्यापारियोंने अनेक तरहसे धन बोया है और धनके भण्डार भरे हैं, तो अैसे संकटके समय अुन्हें अुस धनको फिरसे अनाजके रूपमें बदलनेका और वह छूटसे लोगोंको मिल सके अैसा प्रयत्न करना चाहिये। आपत्तिके समय प्राणी परस्पर बन्धुभावसे और सहयोगसे तथा बलवान द्वारा कमजोरके लिअे त्याग करनेसे ही टिक सकते हैं। यह नियम केवल मनुष्योंको ही नहीं, प्राणियोंको भी लागू होता है। लेकिन अिस नियमका पालन करनेमें प्राणियोंके बनिस्बत मनुष्य ज्यादा गाफिल रहता है। अिसलिअे अुसके पास बुद्धि और दो हाथोंके महान् साधन होते हुअे भी वह अपने हाथों पैदा किये हुअे दुःखोंसे दुःखी होता रहता है।

व्यक्तिके दुःखमें कभी व्यक्तिका और कभी राज्य और समाजका दोष हो सकता है। सार्वजनिक दुःख राज्य और समाजके दोषोंके बिना नहीं हो सकते। अकाल, महामारी वगैरा सार्वजनिक दुःख हैं। अुसमें समस्त शासनतंत्र और समाजके दोष होने ही चाहियें, अैसा मानना चाहिये। वे दोष बुद्धि और नीतिधर्म — नैतिकता — दोनोंके हो सकते हैं। दोनोंकी खोज हमें करनी चाहिये। बुद्धिका दोष ज्यादा गहरा विचार करके दूर करना चाहिये; नीतिके दोष नीयत और सार्वजनिक व्यवहारोंका तरीका सुधारकर दूर करने चाहियें।

केवल सर्दी, गर्मी, हवाका वेग वगैरा ही बरसात लाते हैं या खींच ले जाते हैं, यह धारणा अधूरी है। हमारे शुद्ध-अशुद्ध संकल्प और व्यवहार भी अेक जबरदस्त बलका काम करते हैं। अुन्हें भी सुधारना चाहिये। यह केवल वहम या अंधश्रद्धाकी बात नहीं है। बड़े-बड़े तोपके गोलोंके और अेटम तथा हाअिड्रोजन बमके धड़ाके मानव संकल्पसे ही पैदा हुअी शक्तियां हैं न? कौन कह सकता है कि संकल्पका असर वातावरण पर नहीं हो सकता? ये धड़ाके डर, त्रास वगैरा पैदा करनेके संकल्पसे ही होते हैं। अिस तरह मनुष्यके शुभ-अशुभ संकल्पोंसे प्रेरित बल भी ऋतुओंका कारण होता है। यह बल केवल बमके रूपमें ही हो सकता है, अैसा कोअी नियम नहीं है।

अिसलिअे हम सब तरहसे अपने व्यवहारों और नीयतको शुद्ध करें।

वर्धा, २७-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१३ अक्तूबर १९५१

पंचवर्षीय योजनाकी आलोचना

[प्लानिंग कमीशनके अेक सदस्यके साथ चर्चा करते हुअे श्री विनोबाजी द्वारा पंचवर्षीय योजना पर बताये हुअे विचारोंका सारांश नीचे दिया गया है। पूरी रिपोर्ट 'सर्वोदय' (सितम्बर) में छपी है। —कि० घ० म०]

१. सबको काम

आपकी सारी योजनामें यह बात नहीं है कि हरअेकको काम और भोजन मिलेगा ही। भारतके संविधानमें आपने यह तत्त्व मान लिया है, फिर भी आपकी योजनामें वह प्रतिज्ञा नहीं है। घरका मालिक हमेशा यह मानता है कि सारे कुटुंबको भोजन और काम अभी, अिसी वक्त मिलना चाहिये। अुसी तरहसे सारे समाजका विचार करनेके लिअे सरकारकी जरूरत होती है। यह सिद्धान्त गृहीत करके जब आप योजना बनायेंगे, तो सारी दृष्टि ही बदल जायेगी। अिस दृष्टिसे हमें क्या करना शक्य है, अिसका विचार करना चाहिये। परंतु अिस दृष्टिसे विचार नहीं किया जाता। अुन्हें फौज चाहिये, बड़े पैमाने पर अुद्योग चाहिये। यह सब मानकर ही यह योजना बनायी गयी है। और फिर कहते हैं कि सबको काम देना संभव नहीं है। मैं कहता हूं कि मैं पहले सबको काम और अन्न दूंगा, सारी योजना अुस दृष्टिसे तैयार करूंगा।

सबको काम देनेके बारेमें आपको अैसी प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि अमुक तारीखसे हम सबको काम देंगे। आप अैसी प्रतिज्ञा कीजिये और फिर चाहे जैसा संयोजन कर लीजिये, चाहे जैसे यंत्र लाअिये, मुझे हर्ज नहीं है। परन्तु आप अुलटे कहते हैं कि सबको काम देना संभव नहीं है। सारे राष्ट्रको काम देनेकी जिन पर जिम्मेदारी है, अुन्हें अगर यह संभव नहीं मालूम होता, तो अुन्हें अिस्तीफा दे देना चाहिये!

२. शराबखोरी

अभी मैं सारे तेलंगानामें घूमकर आया हूं। अहिंसामें मेरा विश्वास है, अिसलिअे मैं अपना काम करता रहा। लेकिन वैसा न होता तो मैं कम्युनिस्टोंमें दाखिल हुआ दिखायी देता। अैसी वहांकी परिस्थिति है। अिन पांच-पचास या सौ वर्षोंमें लोग वहां बराबर शराब पीते आये हैं। राष्ट्रके राष्ट्र अूपर अुठे, लेकिन अुनमें कहीं जाग्रति नहीं। परन्तु अिस बातका प्लानिंग कमीशनकी रिपोर्टमें कहीं अुल्लेख नहीं है। अिस बातकी तरफ अुनका कहीं ध्यान नहीं गया है। तेलंगानाके देहातका जीवन मैं देखकर आया हूं। जिस प्रकार आश्रममें शामको प्रार्थना होती हुअी दिखाअी देती है, अुसी प्रकार वहां नित्य झगड़े होते हुअे दिखायी देंगे। मैंने स्वयं लोगोंको अिस तरह लड़ते हुअे देखा है। अुनका जीवन कैसे सुधर सकेगा, अिसकी फिक्र अिस कमीशनको बिलकुल नहीं है।

३. जन्म-नियन्त्रण

परिवार वृद्धिके बारेमें आप कहते हैं—बाल-बच्चे कम कीजिये। मैं कहता हूं—आप हमारे सेवक हैं या गुरु? आपका काम हमें खिलानेका है। हिन्दुस्तानमें प्रजा ज्यादा है, अैसा मैं नहीं मानता। क्या आपका संतति-निरोधके संबन्धमें अनुभव है? प्रजा अधिक क्यों बढ़ती है, अिसका क्या आपने कभी विचार किया है? सिंहके संतति कम होती है, बकरीके ज्यादा होती है। आपके अिस संतान-निरोधके प्रचारसे बच्चे किसके कम होंगे? देहातमें बच्चे कम होनेकी जरूरत है। और आज तो देहातमें ही किसानके बच्चे ज्यादा होते हैं। गिरी हुअी सामाजिक स्थितिकी बदौलत यह सब हो रहा है। अुसका अिलाज संतान-निरोध नहीं है, बल्कि जीवनको योग्य दिशामें मोड़ना है। मैं संतान बढ़ने देनेवाला हूं, लेकिन साथ-साथ यह भी कहनेवाला हूं कि जीवनकी रीति ही अैसी हो, जिससे सन्तान अपने आप ही कम हो और अच्छी हो। सन्तान अच्छी होनेके लिअे जिन बातोंकी जरूरत होती है, अुन्हीं बातोंकी जरूरत संतान कम होनेके लिअे होती है। यह प्रश्न संतान-निरोधका नहीं है, वरन् जीवन-परिवर्तनका और अुसके अनुकूल परिस्थिति निर्माण करनेका है।

४. ग्रामोद्योग

ग्रामोद्योगोंसे आप कहते हैं कि वे अपने पैरों पर खड़े रहें। आप मेरी टांगें तोड़ देते हैं और फिर मुझसे अपनी टांगों पर खड़े रहनेके लिअे कहते हैं! तिस पर भी मैं अपने हाथोंके बल चल लेता हूं, अिसके लिअे आपको मुझे शाबाशी देनी चाहिये। आपको यह विचार करना चाहिये कि सरकार जब विदेशी थी, तब अुसकी अिच्छाके और नीतिके विरुद्ध गांधीजीने खादी और ग्रामोद्योग चलाकर दिखाये। लेकिन अिसकी कद्र करनेके बदले आप हमसे कहते हैं कि गांधीजी जैसे व्यक्तिके पचीस-पचीस वर्ष प्रयत्न करने पर भी जो नहीं हो सका, वह आज कैसे संभव है? मैं आपसे पूछता हूं कि हमें आज जो स्वराज्य मिला है, अुसमें खादीका कोअी दस फीसदी हिस्सा भी है या नहीं? मां कहती है, 'बेटा, मैंने आज तक मेहनत करके तुझे संभाला है। अब तू मुझे संभाल ले।' लेकिन अुसे संभालनेके बदले आप अुसे अुपदेश करने लगे हैं! गांधीजीने जो कियो वह कैसे किया, अिसका मुझे आश्चर्य होता है। अुन्होंने वह अेक चमत्कार ही करके दिखाया।

आपको सोचना यह चाहिये कि गांधी जैसा अकेला आदमी अगर विषम परिस्थितिमें अितना कर सका, तो आज, जब कि अपनी सरकार है, कितना अधिक होना चाहिये? यह 'व्यस्त अनुपात' (अिनव्हर्स प्रपोर्शन) का अुदाहरण है, लेकिन आप अुसे 'सम अनुपात' (डिरेक्ट प्रपोर्शन) का अुदाहरण बनाकर हल करना चाहते हैं। गणितके अज्ञानका यह परिणाम है।

अपने हाल के ही प्रवासमें मैंने गांव-गांवसे पूछा, समाजवादियोंसे भी पूछा कि "भैया, यहां खादीके सिवा और कोअी अुद्योग तुम सुझा सकते हो?" वे भी मानते हैं कि खादीके सिवा दूसरा कोअी अुद्योग हम सुझा नहीं सकते और न दे ही सकते हैं। खादीके लिअे तेलंगानामें काफी अनुकूल परिस्थिति है। सौ सौ स्त्रियां तीन-तीन मीलसे अपने सिर पर चरखे लेकर मुझसे मिलने आती थीं और बड़ी सहजतासे दो-दो, ढाअी-ढाअी घण्टे कातती थीं। अेक तार भी नहीं टूटता था। फिर भी वहांकी सरकार अिसका विचार भी नहीं करती है। अिसका कारण अितना ही है कि आप लोगोंने अपने कुछ गृहीत कृत्य (माने हुअे प्रमेय) स्वीकार कर लिये हैं। अपने अिन गृहीत कृत्योंको अब आप छोड़िये। आप यह कबूल कीजिये कि हम सबको काम देंगे। फिर आप देखेंगे कि ग्रामोद्योगोंके सिवा मार्ग ही नहीं है। आप कहते हैं कि देहातके सब लोगोंको काम देनेकी योजना खुद देहातियोंको ही करनी चाहिये। हम तो हर जगह यही बतलाते आये ह। लेकिन यदि आप यही बतलानेवाले हों, तो फिर आप देहातमें से लगान वसूल करके बाहर क्यों ले जाते हैं? आपका काम सिर्फ सिफारिशें करना नहीं है। अुनका अमल करनेके लिअे अुचित मार्ग सुझानेकी शक्ति आपमें होनी चाहिये। मिलवालोंका पराक्रम सतरह गजसे जो बारह गज पर आया, वह क्यों? कहते हैं कि मिलवालोंको काफी कपास नहीं मिली, अिसलिअे अुत्पादन कम हुआ। कारणके बिना कार्य नहीं होता, यह तो सिद्धान्त ही है। परन्तु अुन्हें कपास नहीं मिली, अिसका अर्थ यही है कि अुन्हें जो कपास चाहिये, वैसी कपास यहां पैदा नहीं होती; और यहां जो कपास होती है, वह अुनके कामकी नहीं। अपना बच्चा नाचता नहीं, अिसलिअे दूसरेका बच्चा नहीं लिया जाता!

www.vinoba.in

अिस पर आयोजन-सभ्यने कहा: पहले भी यहांकी कपाससे कपड़ा होता था; पर वह मोटा व खुरदरा होता था। बाहरसे महीन कपड़ा आने लगा, अिसलिअे यहांका मोटा कपड़ा बन्द हो गया और बादमें बाहरसे कपास मंगाकर यहीं महीन कपड़ा बनना शुरू हो गया।

विनोबा: विदेशी कपड़ा जब आने लगता है, तो अुसके मुकाबलेमें आप स्वदेशी मिलोंको संरक्षण देते हैं न? फिर अुसी तरह मिलोंके मुकाबलेमें खादीको संरक्षण क्यों नहीं देते?

देहातके जो धन्धे आपने छीन लिये हैं, वे आप देहातियोंको वापस नहीं देते। आपकी जो कुछ बुद्धि चलती है, वह अपने बच्चोंको मारनेके लिअे दिमाग चलानेवाले बापकी तरह चलती है। आपने देहातियोंसे कपड़ेका धन्धा छीन लिया और मिलें खोलीं, तेलका धन्धा छीन लिया और तेलकी मिलें खोलीं, गुड़का धन्धा छीनकर शक्करके कारखाने खोले। अिस तरह देहातोंको कंगाल बनाने पर अगर आपने अुन पर चढ़ाअी की, तो वे अुस चढ़ाअीके सामने कैसे ठहर सकेंगे? शहरवालोंका रक्षण तब आप कैसे कर सकेंगे? अिसलिअे अैसा कुछ भी नहीं होना चाहिये, जिससे ग्रामोद्योगोंको नुकसान हो। अिस विषयमें हमारा सिद्धान्त यह है कि जिन धन्धोंका कच्चा माल देहातोंमें पैदा होता है और जिनके पक्के मालकी देहातके लोगोंको जरूरत होती है, वे धन्धे देहातियोंके लिअे रिजर्व्ड यानी सुरक्षित रखने चाहियें। रिजर्व्ड फारेस्ट — सुरिक्षत जंगलों — की तरह कुछ धन्धे देहातियोंके लिअे सुरक्षित क्यों नहीं रखे जा सकते? जवाबमें कहा जाता है कि फिर जीवनमें कोअी मजा नहीं रह जायेगा। मौज-शौकके जीवनके लिअे अिन्हें गांव-गांवड़ोंमें नृत्य और संगीत चाहिये। बंगलोरमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी अुस बैठकके गंभीर वातावरणमें आपने अिसके लिअे प्रस्ताव करा लिया। अिससे तो बेहतर होता कि आप कह देते कि हमें तलवारके बदले तबला चाहिये! कैसा दुर्लक्षण है यह!

५. अन्न-समस्या

आपने प्रतिज्ञा की कि सन् '५१ के बाद हम बाहरसे अन्न नहीं मंगायेंगे। अितनी बड़ी प्रतिज्ञा करनेके बाद अब जब यह दिखायी देने लगा कि वह पूरी नहीं हो सकती, तब आप अेक प्लानिंग कमीशन कायम करते हैं। वह प्लानिंग कमीशन कहता है कि अभी कुछ वर्षके लिअे हमारा देश अन्नके मामलेमें स्वावलम्बी नहीं हो सकता है। और अिसके बाद सरकारको सारी लाज छोड़कर कहना पड़ेगा कि प्लानिंग कमीशन कहता है कि अन्नके मामलेमें देश स्वावलम्बी नहीं हो सकता, अिसलिअे हम बाहरसे अन्न मंगायेंगे!

हम लगातार लिखते आये हैं कि पहले अन्न-स्वावलम्बन साध लीजिये। परन्तु अुधर ध्यान न देकर आज आप कहते हैं कि ३० लाख टन अनाज बाहरसे मंगाना पड़ेगा। और अितनेसे आपको समाधान नहीं है। आपने यह भी लिख दिया है कि शायद ज्यादा भी मंगाना पड़ेगा। क्या आप दरअसल कभी हिन्दुस्तानके रक्षणका विचार करते हैं? यदि करते हों तो क्या कभी यह विचार आपके मनमें आता है कि अन्नकी अड़चन आने पर आप क्या करेंगे? कल अगर पाकिस्तानसे आपकी लड़ाअी हो गअी, तो साफ है कि वह आपको अनाज देनेसे अिनकार करेगा। फिर अमेरिका वगैरा जो कोअी आपको अनाज देंगे, वे आपके लिअे प्रेमके कारण देंगे या आपको अपने बंधनोंमें बांधनेके लिअे देंगे? अिसलिअे आप कमसे कम अितना क्यों नहीं कहते कि अन्न और वस्त्रके बारेमें हमें स्वावलम्बन पहले साधना है। प्लानिंग कमीशनकी रिपोर्ट पढ़कर आज देहातके लोगोंको अधिक अन्न अुपजानेकी प्रेरणा नहीं हो सकती। संकटके समय देशके लिअे कुछ त्याग करनेकी स्फूर्ति अुन्हें यह रिपोर्ट पढ़कर नहीं मिलती।

६. गोवध-बन्दी

आपने अपनी रिपोर्टमें अेक जगह कहा है कि कसाअीखानोंका भी पशु-संख्या पर कोअी परिणाम नहीं हुआ है। कमजोर ढोरोंको मार डालनेसे अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे अत्यन्त सम्पन्न योजना बनेगी, अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन वैसा करो, यह कहनेकी आपकी हिम्मत नहीं है। किसी भी विषयमें स्पष्ट मार्गदर्शन करनेकी आपकी हिम्मत नहीं दिखाअी देती। शस्त्रीकरण करो कहनेकी हिम्मत नहीं है, यंत्रीकरण करो कहनेकी भी हिम्मत नहीं है। गोहत्या बन्द करनेकी जरूरत नहीं है, यह कहनेकी भी हिम्मत नहीं है। लेकिन आपको यह पहचान लेना चाहिये कि अिस देशमें गोहत्या चल नहीं सकती। गाय-बैल हमारे समाजमें दाखिल हो गये हैं और अिसलिअे यह हमारा समाजवाद है। लोग मुझसे पूछते हैं कि, "क्या दूसरे जानवरोंकी तुम्हें दया नहीं आती?" मैं कहता हूं, "नहीं। पहले मुझे गाय पर दया कर लेने दो। अुसको अगर मैं बचा सका, तो फिर बची हुअी दया दूसरोंके लिअे बरतूंगा। गायको बचाकर ही मैं दूसरोंको बचा सकूंगा।" प्रश्न सीधा है कि आपको अपने देशका रक्षण करना है या नहीं? यदि करना है तो गोवध भारतीय संस्कृतिको अनुकूल नहीं आता, अिसका आपको ध्यान रखना चाहिये। गोहत्या जारी रही, तो हिन्दुस्तानमें बगावत होगी। अिसलिअे 'गोहत्या जारी रहे' कहनेकी हिम्मत आपकी नहीं होती। संतान-निरोधके बारेमें आप स्पष्ट बोलते हैं। शराबबंदीके बारेमें 'धीरे चलो' का आग्रह रखते हैं। अुसी तरह यह भी कह डालिये कि गाय मारनेमें कोअी हर्ज नहीं! परन्तु राष्ट्रकी परिस्थिति देखकर आप वैसा नहीं कर सकते। हमारा कहना यह है कि गोहत्या-बन्दी करना ही अुचित है। राष्ट्रकी आर्थिक परिस्थिति अिस बोझको अुठा सकती है। गो-सदनमें रहनेवाले ढोरोंके मलमूत्र और हड्डियोंकी खादका भली-भांति अगर हम अुपयोग कर सकें, तो गो-पालनका बोझ नहीं होगा। और मुसलमानोंकी तरफसे यदि आप आश्वासन चाहते हों, तो मैं लिखकर देता हूं कि अुन्हें गोहत्या नहीं चाहिये।

मेव लोगोंसे मैंने मस्जिदोंमें जाकर कहा कि "अल्लाह अगर मांसका भूखा होता और मांससे प्रसन्न होनेवाला होता, तो अुसे ये कसाअी ही खुश कर लेते। अुसका सन्देश सुनानेके लिअे पैगंबरकी जरूरत न रही होती। परन्तु वह मांसका भूखा नहीं है, भक्तिभावका भूखा है।" मेरी यह बात अुनकी समझमें आ गअी। अुस वक्त सरकारने वहां गोहत्या-बन्दीका अैलान नहीं किया था। मौलवी लोग मेव लोगोंसे कहते ही थे कि गो-हत्या नहीं होनी चाहिये। परन्तु अेक गांवमें दो गायें मारी गअीं और अुस परसे वहां तूफान मचानेकी नौबत आअी, तब मैंने लोगोंको समझाया और मामला बढ़ने नहीं दिया।

क्या आप अैसा नहीं मानते कि गोहत्या-बन्दी हिन्दुस्तानके लोगोंका मैंडेट (लोकाज्ञा) है? आपको निःसंदिग्ध रूपसे कहना चाहिये कि हम गोहत्या-बन्दी करेंगे। वैसे, अिस विषय पर जवाहरलालजीका बंगलोरका भाषण मुझे बहुत पसन्द आया। अुन्होंने कहा, "दिल्लीमें बैठ कर कोअी अेक फतवा निकाल दे और गोहत्या-बन्दी हो जाय, यह अुचित नहीं।" अुनका कहना ठीक है। कोअी अेक मुगल सम्राट दिल्लीके तख्त परसे गोहत्या-बन्दीका हुक्म जारी कर दे, अिस तरहका यह सवाल ही नहीं है। परन्तु प्रधान-मंत्री स्वराज्यमें लोकमतका प्रतिनिधि है। यदि वही यह बात न करे तो फिर कौन करे?

७. बुनियादी तालीम

सिर्फ अितना कह देनेसे कि बेसिक-पद्धति मान्य है, काम नहीं चलेगा। यह दिखाना होगा कि प्रचलित शिक्षण-पद्धतिकी अपेक्षा बुनियादी तालीमका खर्च ज्यादा है या कम। बुनियादी तालीमके कारण लड़कोंके मनमें अभेद-भावनाका परिपोष होता है, अिसलिअे

www.vinoba.in

शुरूसे चाहे बुनियादी शाला स्वावलम्बी भले ही न मालूम होती हो, तो भी अंतमें वह केवल स्वावलम्बी ही नहीं, बल्कि श्रेयस्कर भी साबित होती है। अिसलिअे आपको कहना चाहिये कि वह शाला चल सकती है, और प्लानिंग रिपोर्टमें बुनियादी शालाकी योजना देनी चाहिये। शालाके पास दो अेकड़ जमीन होनी चाहिये और लड़कोंको अपनी मेहनतसे शालाके बगीचेमें साग, तरकारियां और कपड़ेके लिअे जरूरी कपास पैदा कर लेनी चाहिये। शिक्षकको अिस जमीनमें से अपने गुजरके लायक साग-भाजी और कपास मिलती रहनी चाहिये। गांवके गुरुजीको अेक-अेक पायली (१०० तोला) गल्ला मिलना चाहिये। अितना सब करने पर भी और जो फुटकर खर्च आयेगा, वह अिस योजनामें बतलाना चाहिये।

हरिजन लड़कोंके लिअे छात्रालय तथा आश्रमोंकी योजना आपने सुझायी है। हमारे मतसे अब आगे चलकर हरिजनोंके लिअे अलग छात्रालय या आश्रम नहीं होने चाहियें। हरिजन लड़कोंके बारेमें सिर्फ अितना ही देखना काफी नहीं है कि अुनका शिक्षण कैसे बढ़ेगा, बल्कि यह भी देखना चाहिये कि अस्पृश्यता-निवारणपूर्वक शिक्षण कैसे बढ़ेगा? अिसलिअे अलग छात्रालय खोलनेके बदले अुन्हें सबके लिअे चलनेवाले छात्रालयोंमें ही प्रवेश दिलाना चाहिये।

८. जमीनके बारेमें सरकारकी नीति

आप कहते हैं कि छोटे-छोटे टुकड़ोंसे अुत्पादन कम होता है। अपना यह गृहीत कृत्य आपको सिद्ध करना पड़ेगा। सामुदायिक खेतीका शिक्षण सबको देनेके बाद भविष्यमें अुस तरहकी खेती की जा सकेगी। परन्तु जब तक व्यक्तिगत खेतीकी तरफ लोगोंका झुकाव है, तब तक जमीनके छोटे-छोटे टुकड़ोंके कारण अुत्पादनमें कमी होगी, अैसा माननेकी कोअी वजह नहीं है। तेलंगानामें शुरूमें मैंने सहयोगी खेतीकी शर्त पर ही वहांके लोगोंमें जमीन बांटी, परन्तु बादमें मेरे ध्यानमें आया कि अिस पद्धतिसे काम नहीं होगा। मैंने देखा कि सरकार द्वारा चलाये जानेवाले सहयोगी खेतीके प्रयोगको देखकर वे लोग हंस रहे हैं, क्योंकि वह प्रयोग असफल साबित हुआ है। गरीब लोगोंको गणितका ज्ञान नहीं होता। सहयोगी खेतीके लिअे गणितका ज्ञान चाहिये, नहीं तो देहातके लोग घबराते हैं। अिसलिअे मैंने सहयोगी खेतीकी शर्त छोड़ दी और व्यक्तिगत खेतीके लिअे ही जमीन बांटनी शुरू कर दी। जिन लोगोंने मुझे सहयोगी खेतीकी शर्त पर जमीन देनेकी अिच्छा प्रगट की, अुनसे मैंने कहा, "पहले आप बड़े-बड़े आदमी अुस तरहका प्रयोग करके दिखाअिये।" सहकारी खेतीमें ये लोग अपना खासा हिस्सा रखकर अपना प्रभाव कायम रखना चाहते थे। मैंने अुनसे कहा, "आप जमीनें दे डालिये। जमीनके विषयमें स्वामित्वकी भावनासे मुक्त हो जाअिये। गरीबोंको अुसके मालिक बनने दीजिये।"

बहस करनेवालोंने अनअिकॉनॉमिक होल्डिंग (आर्थिक दृष्टिसे अपर्याप्त) और अिकॉनॉमिक होल्डिंग (आर्थिक दृष्टिसे पर्याप्त)की दलीलें भी पेश कीं। लेकिन यह आर्थिक पर्याप्त और अपर्याप्तका प्रश्न बैलोंके कारण ही अुपस्थित होता है, क्योंकि बैल कहता है कि मैं बीस अेकड़से छोटी अिकाअी पर काम नहीं कर सकता। मैं कहता हूं कि चार कुटुंब मिलकर बैलजोड़ी रखेंगे और अुस हद तक सहयोग करेंगे। और भी जिन-जिन बातोंमें सहयोग कर सकेंगे, करेंगे। लेकिन जो-जो खेती करना चाहता है और जो-जो खेत मांगता है, अुसे खेत मिलना चाहिये। वहां आर्थिक पर्याप्त और आर्थिक अपर्याप्तका सवाल अुपस्थित नहीं होना चाहिये।

प्रोफेसर बंग * मुझसे कहने लगे, "मुझे ढाअी सौ अेकड़ जमीन चाहिये।" मैंने कहा, "मैं आधे अेकड़से आरंभ करूंगा।" आखिर अेक सालके बाद वे पचीस अेकड़ पर अुतरे। मैं पौन अेकड़ तक बढ़ा। शुरू-शुरूमें खाद और बीजका खर्च आया। अब आगे वह भी खर्च नहीं आयेगा। अिस पौन अेकड़ जमीनमें से हमने दस हजार पौंड साग-भाजी निकाली। दो आना पौंडका हिसाब लगायें, तो भी १२५० रुपयेकी साग-भाजी हुअी।

हमने रहट भी हाथसे ही चलाया। वर्षाकी भी कुछ खेती हमने की है, परन्तु बारिशके भरोसे रहनेसे काम नहीं चलेगा। अिसी-लिअे नारदने धर्मराजसे पूछा था, "तेरे राज्यमें खेती सिर्फ देवताके भरोसे तो नहीं होती?" देवतासे मतलब है बारिश। यदि हम जमीनके नीचे छिपी हुअी गुप्त-गंगा प्रकट कर सकें, तो हिन्दुस्तानकी जमीनकी योग्यता पांचगुनी बढ़ेगी। अिसलिअे हमने तेलंगानाकी यात्रामें लोगोंको सर्वत्र जमीनमें कुअें खोदनेका कार्यक्रम ही बतलाया। हरअेक शादीमें अेक कुआं, अिस हिसाबसे कुअें खोदे जायं, तो चालीस सालमें होनेवाले बीस करोड़ विवाहोंमें बीस करोड़ कुअें खुदेंगे। जहां कुअें खोदना बिलकुल असंभव ही है, वहांकी बात अलग है। लेकिन अकसर जमीनमें पानी होता ही है, यह नियम है। जमीनके नीचे छिपी हुअी यह सरस्वती प्रकट होनी चाहिये।

अिसलिअे जिनके पास जमीनें अधिक हैं, अुनसे लेकर जो-जो जमीन मांगते हों और जिनके पास न जमीन है और न कोअी दूसरा ही धन्धा, अुन्हें वह बांट दी जाय।

गांवके लोग कमसे कम अंशमें कांचनाश्रित रहें और अुनकी आवश्यकताअें गांवमें ही पूरी हों, अिसका ध्यान यदि रखा जाय तो सबको काम देना असंभव नहीं है। लेकिन गांववाले कांचनाश्रित न रहें, अिसके लिअे हम कहते आये हैं कि लगान गल्लेके रूपमें वसूल किया जाय। आप अैसा क्यों नहीं करते?

[नोट: खेतीमें छोटे-छोटे टुकड़े क्यों कम अुत्पादन करते हैं, अुसके कअी कारण हैं। गहरी खेती सफलतापूर्वक करनेके लिअे जो-जो सुविधायें चाहियें, वे खेतिहरसे छीन ली गअी हैं। सरकारकी जमीन-लगानकी नीति और भूमि लेने-देनेका कानून भी अिसमें कारणभूत है। अिस विषय पर मैं कभी विस्तारपूर्वक लिखनेकी अुम्मीद रखता हूं। —कि० घ० म०]

बहिष्कार-आन्दोलनकी आवश्यकता

रचनात्मक काममें जड़ता

कताअी-मंडलके मौलिक आधार तथा योजनाके बारेमें लोगोंकी दृष्टि साफ हो, अिस हेतु पिछले ९ महीनोंसे विभिन्न प्रान्तोंमें मैंने दौरा किया। प्रांतोंके सभी प्रकारके रचनात्मक कार्यकर्ताओंके सम्पर्कमें आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। अुनसे रचनात्मक कार्यके विभिन्न पहलुओं पर काफी चर्चा हुअी। अैसी चर्चाके सिलसिलेमें मैंने अेक बात देखी, जो कि सभी जगह करीब-करीब अेक-सी ही रही। अधिकांश कार्यकर्ता अपने कामके बारेमें कुछ निराशा जाहिर करते रहे। अैसा लगता था कि लोग रास्ता चलते हुअे आगे अंधकार देख रहे ह। कुछ कार्यकर्ताओंमें अितनी समझ भी नहीं रही कि वे अिसके आगेका विचार कर सकें। वे श्रद्धासे, लेकिन जड़वत् घानी चलानेमें, कुछ चरखा चलानेमें या कहीं अेक-आध बुनियादी शाला चलानेमें मशगूल हैं। वे कार्यक्रमका ढांचा तो चलाते रहते हैं, लेकिन अगर कोअी पूछे तो वे बता नहीं सकते कि वे अैसा क्यों कर रहे हैं। कोअी भूत-दयासे प्रेरित होकर लोगोंका कुछ भला करनेके अुद्देश्यसे सेवामें लगे हुअे हैं। कोअी कहते हैं कि हमें नया समाज बनाना है, लेकिन कैसा नया समाज, और वह कसे प्राप्त होगा, अुसकी दृष्टि और योजनाके बारेमें कोअी साफ धारणा नहीं है। कुछ भाअियोंको अैसा भी

* महाकाल (वर्धा) में स्वावलम्बी खेती और साम्ययोगके प्रयोगोंमें संलग्न सेवक।

www.vinoba.in

पाया कि वे खादी, ग्रामोद्योग आदिसे समस्याका हल होनेवाला है अैसा विश्वास नहीं करते हैं या करना छोड़ दिया है। अुनसे यह पूछने पर कि वे क्यों अिस कामको चला रहे हैं, वे कहते हैं, "२५ सालसे यही करता आ रहा हूं। अब नया रास्ता क्या पकड़ूं? अगर सरकार और समाज यह करने दे, तो जो थोड़ी जिन्दगी बाकी है, अिसीमें काट दूं। काम तो अच्छा है ही। गरीबोंकी सेवा भी होती है।" अित्यादि। अिस प्रकार हमको लगा कि रचनात्मक काम करनेवालोंकी दृष्टि कुछ धूमिल हो रही है। अिसलिअे अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर अिस दिशामें गंभीर विचार करें।

यह जड़ता हमें नष्ट कर देगी

हमें विचार करना चाहिये कि हम रचनात्मक काम क्यों करते हैं? व्यक्तिगत रूपसे और संस्थागत रूपसे सबको यह तय करना होगा कि वे किस दृष्टिसे अपना काम कर रहे हैं। अंग्रेजोंके चले जानेके पहले हमारी साधारण दृष्टि गरीबोंको राहत पहुंचाकर जन-संपर्क बढ़ानेकी और जनतामें राष्ट्रीय जागृति पैदा करनेकी थी, ताकि विदेशी राजको हटानेमें जनता हमारा साथ दे। कुछ गरीबोंको राहत पहुंचानेकी स्वतंत्र दृष्टि भी रही, लेकिन साधारण दृष्टि आजादी हासिल करनेकी थी। अब वह बात नहीं रही। अब लोगोंके लिअे यह पूछना स्वाभाविक है कि स्वतंत्रता-प्राप्तिके बाद भी अिसे क्यों किया जाय? हम जब चरखेकी बात करते हैं, तो लोग हमसे कहते हैं कि स्वराज्य तो मिल गया, अब चरखा क्यों? अैसा सवाल करनेवालोंमें चरखा-संघ आदि अखिल भारतीय तथा प्रांतीय संस्थाओंके कार्यकर्ता भी काफी हैं। यही कारण है कि विभिन्न संस्थाओंका वातावरण, संस्थावासियोंकी जिन्दगीके तर्ज और तरीके, रचनात्मक कार्यके अुद्देश्यके अनुकूल और अनुरूप नहीं होते। अगर हम गंभीरतापूर्वक अपनी दृष्टि साफ करके अुसके अनुसार अपना रवैया नहीं बनायेंगे, तो हम गतिहीन होकर समाप्त हो जायेंगे।

सारी संपत्तिका अुत्पादक, फिर भी "दरिद्र"-नारायण!

रचनात्मक कार्यकी मुख्यतः दो दृष्टियां होती हैं—(१) परोपकारी दृष्टि अर्थात् गरीबोंको राहत पहुंचानेकी चेष्टा और (२) क्रांतिकारी दृष्टि अर्थात् मौजूदा दूषित समाज-व्यवस्थाको तोड़कर नये प्रकारकी कल्याणकारी समाज-व्यवस्था कायम करनेकी चेष्टा। रचनात्मक कार्य द्वारा गरीबोंको राहत पहुंचानेकी बात बापके पहले भी बड़े लोग करते रहे हैं। दरिद्रनारायणकी सेवाकी बात पुरानी है। बापूने भी दरिद्रनारायणकी सेवाकी बात की थी। वे अिस सेवाके लिअे देहातकी ओर जानेको कहते रहे हैं, क्योंकि अुनकी दृष्टिसे दरिद्रनारायणका निवासस्थान देहात ही है। लेकिन अैसा क्यों? आखिर दुनियाकी सारी संपत्तिका जन्म होता है—धरित्री माताके गर्भसे ही। विद्वान लोग कहते हैं कि संपत्तिकी अुत्पत्ति धरित्री पर श्रम लगाकर ही होती है और ये श्रम लगानेवाले हैं देहाती। जब देहातके लोग सारी संपत्तिका अुत्पादन करते हैं, तो वे दरिद्र होकर नारायणका पद कैसे पा गये? यह अेक अजीब बात है!

दूसरी तरफ हम देखते हैं कि शहरवाले विपुल संपत्तिके अधिकारी हैं। वहां पर आकाशभेदी कोठियां दिखायी देती हैं। सुनते हैं, शहरोंमें अितना धन अिकट्ठा होता है कि वे कोठी बनानेके लिअे आसमान खरीदते हैं। अगर गांववाले दरिद्रनारायण हैं, तो शहरवाले श्रीमान्-भगवान्! लेकिन वे धरित्री पर श्रम नहीं लगाते। फिर अुनके पास अितनी संपत्ति कैसे आ गयी? यह अेक तमाशेकी बात है।

हमें राहतका नहीं, क्रांतिका काम करना है।

असलमें शहरवाले धरित्री पर श्रम न लगाकर आदमी पर अपनी पूंजी और बुद्धि लगाते हैं। अिस तरह देहातके लोग जिस संपत्तिको पैदा करते हैं, अुसे वे दलाली करके हड़प लेते हैं। शहरके श्रीमानों द्वारा शोषण होनेके नतीजेसे जब गांववाले गरीब हो जाते हैं, तो हम अुनकी गरीबी दूर करनेके लिअे सेवा करनेको पहुंचते हैं। हम अुनसे कुछ खादी बनवाते हैं, कुछ ग्रामोद्योगकी चीजें बनवाते हैं और अुसे शहरके श्रीमानोंको बेचकर अुन देहाती गरीबोंको कुछ पैसा देते हैं। हम श्रीमानोंसे कुछ चंदा लाते हैं और गरीबोंमें जाकर दवा बांटते हैं। अिस तरह शहरवाले देहातियोंसे जो विपुल संपत्ति प्राप्त करते हैं, अुसमें से अुन्हें थोड़ासा टुकड़ा वापस देकर हम अुनकी गरीबी दूर करनेकी चेष्टा करते हैं। अेक जगह मिट्टीका भीटा बनानेमें कहीं दूसरी जगह गढ़ा बनता है। फिर गढ़ेका पानी सड़कर जब हमें तकलीफ देने लगता है, तब यदि हम चाहेंगे कि अुस भीटेमें से अेकाध टोकरी मिट्टी निकालकर अुस गढ़ेको पाट लें, तो अैसा होना असंभव है। अुसी तरह शहरका अूंचा टीला बनानेमें देहातियोंके पेटमें जो गढ़ा होता है, अुसे हम शहरवासियोंसे थोड़ा चंदा मांगकर भरनेकी कोशिश करते हैं। अैसी कोशिशसे अुस भूखी-नंगी आबादीको क्षणिक राहत भी मिल जाती है। अिस विचारसे हम जो रचनात्मक काम करते हैं, अुसको परोपकारी दृष्टि कहते हैं। दुनियामें बहुतसे दयालु व्यक्तियोंने अैसे परोपकारसे अपना जीवन सार्थक किया है। अिस कामके लिअे अुन्होंने बहुत त्याग और तपस्या की है। सनातन कालसे परोपकारी वृत्तिके लोग अैसे राहतके काम करते आये हैं, पर गांधीजी रचनात्मक कार्यके द्वारा संसारमें शोषणहीन समाज कायम करना चाहते थे। वे यह नहीं चाहते थे कि जो लोग अुत्पादन नहीं करते हैं, वे अुत्पादककी संपत्तिका शोषण करके धनी होते रहें और सेवक लोग अनन्त काल तक अिन धनिकोंसे बूंद-बूंद धन मांगकर और अुसे गरीबोंमें वापस करके राहतका काम करते रहें। अुनका ग्रामसेवाका अुद्देश्य यह था कि समाजका ढांचा अैसा बने, जिससे अुत्पादक वर्गका शोषण ही न होने पाये। वे चाहते थे कि आज जो पूंजी और दलालीके आधार पर केन्द्रीय अुत्पादन तथा व्यवस्था-पद्धति चालू है, अुसे तोड़कर हम विकेन्द्रित स्वावलंबी पद्धति कायम करनेमें लग जायं। अिस तरह अेक चीज तोड़कर दूसरी चीज बनानेका जो तरीका है, वह गांधीजीके रचनात्मक कार्यकी नयी देन है। पिछली बार जेलसे लौट कर जब गांधीजीने देख लिया कि अंग्रेज अब जा रहे हैं और मूल क्रांतिका कार्य शुरू करना चाहिये, तबसे ही वे रचनात्मक संस्थाओंको अिस क्रांतिकारी दिशामें कदम अुठानेको आगाह करने लगे; चरखा-संघको स्पष्ट रूपसे अपना पुराना स्वरूप बदल कर नयी दृष्टिसे शोषणहीन समाजकी स्थापना करनेकी दिशामें योजना बनानेको कहा। अुन्होंने साफ-साफ कह दिया कि राहतका युग समाप्त हो गया, अब अिसीमें श्रद्धा बतानी है।

निर्णयका समय आ चुका है

रचनात्मक कार्यकर्ताओंको गंभीरतासे तय करना होगा कि वे किस दृष्टिसे काम करें। अुन्हें दोनोंमें से कोअी अेक मार्ग अुठाना होगा। दृष्टि स्पष्ट हो जाने पर रास्ता साफ दिखायी देगा और निराशा तथा जड़ता भी दूर हो जायगी। जो लोग परोपकारी दृष्टिसे काम चलाना चाहते हैं, वे अुस काममें लग जायं और अेकाग्रताके साथ अुस दृष्टिसे काम करें। फिर वे अपने मनमें समाज-व्यवस्था बदलना, नयी समाजरचना करना, आदि बातोंको सोचकर अपनेमें बुद्धिभेद न पैदा करें।

रामकृष्ण-मिशन, क्रिस्ती-मिशन आदि अैसी बहुतसी रचनात्मक संस्थायें हैं, जो अिसी दृष्टिसे काम कर रही हैं। अुनकी दृष्टि साफ होनेके कारण अुनमें संतोष है, निराशा नहीं। लेकिन जो लोग क्रांतिकारी दृष्टिसे रचनात्मक कार्य कर रहे हैं या करना

www.vinoba.in

चाहते हैं, अर्थात् जो मौजूदा पद्धतिको बदल कर नयी पद्धतिकी रचना करना चाहते हैं, अुन्हें अपने कार्यक्रम तथा जीवनचर्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा। जहां वे रचनाका काम करते हैं, वहां अुन्हें अुन चीजोंको तोड़नेका काम भी करना होगा, जिनकी समाप्ति मौजूदा समाज-व्यवस्थाको खतम करनेके लिअे आवश्यक है। अगर वे चरखा और ग्रामोद्योगका काम करते हैं, गोपालनका काम करते हैं और नयी तालीमका कार्य चलाते हैं, तो अुन्हें साथ-साथ यंत्रोद्योग, महिष-पालन तथा पुरानी तालीमको रोकनेका काम भी करना होगा।

जन-आन्दोलनका आवाहन

क्रांति दो तरीकोंसे हो सकती है — सरकारकी ओरसे तथा जन-संगठन और जन-सेवकोंकी ओरसे। अगर सरकार अिन योजनाओंको चलाना चाहती है, तो अनिवार्य आवश्यकता अिस बातकी है कि सरकार यंत्रोद्योग, महिष-पालन तथा पुरानी तालीम पर सरकारी तरीकेसे रोक लगानेकी व्यवस्था करे। अगर सरकार अैसा नहीं करती है, तो विकेन्द्रित अुद्योग आदिके लिअे वह जो कुछ शक्ति और साधन खर्च करती है, वह सब निष्फल होगा। अगर जन-सेवक तथा जन-संस्थाओं द्वारा अिस क्रांतिको करना है, तो अुनके लिअे यह आवश्यक होगा कि वे चरखा, ग्रामोद्योग, गो-पालन और नयी तालीमका काम करते हुअे यंत्रोद्योग, महिष-पालन, पुरानी तालीम आदिका बहिष्कार आन्दोलन चलायें। वे व्यक्तिगत तथा संस्थागत जीवनमें अिन चीजोंके बहिष्कारका संकल्प करें तथा जितने व्यक्तियों और संस्थाओंको समझा सकें, अुनसे बहिष्कार आन्दोलन चलवायें। जनतामें आन्दोलनकी प्रगति होने पर आम बहिष्कारका संगठन भी करें, नहीं तो जो कुछ रचनात्मक काम हम कर रहे हैं, सब नयी समाज-रचनाकी दृष्टिसे बेकार होगा।

हम बेहोश हो रहे हैं

पिछले दौरेके सिलसिलेमें जब मैंने सेवकोंसे तथा संस्थाओंके संचालकोंसे यह बात कही, तो किसीने मुझसे मतभेद जाहिर नहीं किया। सब अिसके औचित्यको स्वीकार करते थे। लेकिन अुनका कहना था कि अिसको करनेमें कठिनाअी है। परिस्थिति अनुकूल नहीं, अिसलिअे मुश्किल है। परंतु सभी सेवक और संस्थाओंके लोग जब सरकारको यंत्रोद्योग आदि पर रोक लगानेको कहते हैं और सरकार जवाबमें यह कहती है कि अिसमें कठिनाअी है, परिस्थिति अनुकूल नहीं है, तो वे असंतुष्ट होते हैं और शिकायत करते हैं। हम लोग क्रान्तिके कामको आगे बढ़ानेकी जिम्मेदारी अुठाते हुअे परिस्थिति और कठिनाअीकी बात करते हैं, तब सरकार यदि अैसी बात कहती है तो अिसमें आश्चर्य क्या है?

मैं मानता हूं कि कभी-कभी और कहीं-कहीं परिस्थितिकी मजबूरी होती ह। लेकिन क्या यह बात सही है कि हमारे सेवक और संस्थाअें बहिष्कारका आग्रह रखती हैं, सारे सम्भव और जायज तरीकोंसे कोशिश करती हैं और अनिवार्य मजबूरीके कारण अुसे नहीं कर पाती हैं? मुझे तो अैसा नहीं लगा। मैं जहां तक समझ सका हूं, आज हम लोग कुछ बेहोशीमें काम कर रहे हैं और अुद्देश्यकी धारणामें स्पष्टता नहीं है, जिसीलिअे अैसा नहीं हो पाता। अगर सेवक और संस्थाअें अुद्देश्यके बारेमें निश्चित विचार रखें और अुसके अनुसार अपना कार्यक्रम बनाकर अुस पर स्थिर रहनेका आग्रह रखें, तो वे परिस्थितिको अनुकूल बना सकती हैं अैसा मेरा विश्वास है।

स्पष्ट धारणा और संकल्प-शक्तिकी जरूरत

मैं यह भी मानता हूं कि अिन बातोंके कायल होने पर भी हम सारी बातें अेक साथ करनेकी शक्ति नहीं रखते हैं, क्योंकि आखिर हम सब कमजोर अिन्सान हैं। लेकिन अगर हम होशके साथ धीरे-धीरे भी कदम अुठायें, तो हमें साफ रास्ता दिखाअी पड़ेगा और हम प्रगतिके पथ पर होंगे। मुख्य बात स्पष्ट धारणा और संकल्प-निष्ठाकी है। हम यह सोच सकते हैं कि शुरू-शुरूमें खाने-कपड़ेके लिअे यंत्रोद्योगका बहिष्कार किया जाय, बादमें धीरे-धीरे आगे बढ़ें। अुसमें से अेकाध मदको लेकर अपनी शक्ति लगायें। कोअी व्यक्ति या संस्था कुछ ज्यादा करे और कोअी कुछ कम करे, अैसा भी हो सकता है। लेकिन अिस दिशामें अगर हम बाहोश चेष्टा न करते रहे, तो न केवल हमारी ही प्रगति रुकेगी बल्कि हम अुद्देश्यहीन होकर क्रमशः निष्क्रिय हो जायेंगे।

बहिष्कार-आंदोलनकी आवश्यकता

हमारे त्याग तथा चारित्र्यके कारण परलोकमें शायद हमें व्यक्तिगत रूपसे जगह मिल जाय, लेकिन समाजमें क्रांति नहीं हो सकेगी।

स्वदेशीके प्रचारके साथ-साथ अगर हम विदेशीके बहिष्कारका आन्दोलन नहीं चलाते, तो देशमें स्वदेशीका प्रचार न होता। अुसी तरह ग्रामोद्योगके प्रचारके साथ-साथ अगर हम यंत्रोद्योगके बहिष्कारका आन्दोलन नहीं चलायेंगे, तो हमारा ग्रामोद्योग बेकार तथा गरीब लोगोंको थोड़ी-सी राहत-मात्र पहुंचानेका काम कर सकेगा, विकेन्द्रित स्वावलम्बी तथा शोषणहीन समाज-रचना नहीं हो सकेगी।

मुझे आशा है कि रचनात्मक संस्थाओंके संचालक तथा सेवक मेरे अिस नम्र निवेदन पर गंभीरतासे विचार करेंगे।

धीरेन्द्र मजूमदार

अध्यक्ष, अ० भा० चरखा-संघ

गांधीजीका अुपवास

संपादक, टाअिम्स ऑफ अिंडिया

महोदय,

मि० चर्चिलने अपनी पुस्तक 'दि हिंज ऑफ फेट' में गांधीजीके अुपवासके बारेमें जो नीचेकी बात लिखी है, वह गलत है:

> "लगभग अुपवासके शुरूके दिनोंमें ही जब कभी वे (गांधीजी) पानी पीते, तब अुन्हें ग्लुकोज दिया जाता था। और अन्तमें जब अुन्हें हमारे कड़े रुखका विश्वास हो गया, तो अुन्होंने अपना अुपवास छोड़ दिया।"

अुपवासके दरमियान न तो कभी गांधीजीको ग्लुकोज दिया जाता था और न अुन्होंने निश्चित अवधिसे पहले अपना अुपवास छोड़ा था। गांधीजीको २१ माह तक आगाखान महलमें नजरबन्द रखा गया था। अुस पूरे अरसेमें मैं वहांका सुपरिन्टेन्डेन्ट था। रात-दिन मैं महात्माजीके साथ अेक ही मकानमें रहता था। और मुझे अच्छी तरह याद है कि महात्मा गांधीने अपनी देखभाल करनेवाले डॉक्टरोंसे यह गंभीर वचन ले लिया था कि अुपवासके दरमियान अनके बेहोश हो जाने पर भी अुन्हें ग्लुकोज नहीं दिया जायगा।

बम्बअी, २७ सितम्बर अे० बी० कट्टेली

[१ अक्तूबर, '५१ के 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' से]

विषय-सूची

		पृष्ठ
भ्रष्टाचार पर रोक	श्रीकृष्णदास जाजू	२८९
विनोबाकी तेलंगाना – यात्रा : ४	दा० मूं०	२९०
अकालकी छाया	क्रि० ध० मशरूवाला	२९१
पंचवर्षीय योजनाकी आलोचना	विनोबा	२९२
बहिष्कार-आन्दोलनकी आवश्यकता	धीरेन्द्र मजूमदार	२९४
गांधीजीका अुपवास	अे० बी० कट्टेली	२९६

www.vinoba.in